शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2014

'कस्बाई सिमोन' में नारी मुक्ति का स्वर

अंकिता शर्मा (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

'नारी मुक्ति' कहने मात्र का शब्द नहीं है। इसे व्यवहार में लाना भी अनिवार्य है। नारी का अपना जीवन है और वह सिर्फ महिमामंडित होकर नहीं अपितु प्राणीमात्र बनकर जीना चाहती रही है, यह शरदसिंह ने अपने उपन्यास 'कस्बाई सिमाने' में बखूबी व्यक्त किया है। इस उपन्यास में नारी की स्वतंत्रता की बात की गई है, जो पश्चिमी महिलाओं को तो प्राप्त है, परंतु भारतीय परिवेश की महिलाओं को नहीं ? इस उपन्यास की नायिका नारी के अधिकारों की बात करती है, जो कि पुरूषों को तो प्राप्त है, लेकिन नारी को नहीं ? नारी पुरूषों से कम नहीं तो अधिक की भी मांग नहीं करती है। जो नारी सदियों से आहत होती आ रही है वह अब अपनी तरह से जीवन व्यतीत करना चाहती है। विवाह जैसे बंधन से मुक्त होकर व संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी समस्या पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में सामाजिक गतिशीलता का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। मध्यकाल में समाज में नारी की अपमानजनक स्थिति और दुर्दशा पग-पग पर थी। आज भी यही दशा है। इसी बात को शरदसिंह अपने उपन्यास के माध्यम से व्यक्त करती हैं। स्त्रियों की दशा को सुधारने के लिये राजा राम मोहन राय ने 1828 में ब्रह्म समाज की, महर्षि दयानंद सरस्वती ने 1857 में आर्य समाज की स्थापना की। प्राचीन काल में आठ प्रकार के विवाह किये जाते थे। ब्रह्म विवाह, दैव विवाह, आर्य विवाह, प्राजापत्य विवाह, आसुर विवाह, गन्धर्व विवाह, राक्षस विवाह, पिशाच विवाह, सभी को समाज की मान्यता प्राप्त थी, लेकिन धीरे-धीरे यह परिपाटी बंद हो गई। प्रत्येक धर्म में विवाह की परिपाटी अलग-अलग है और प्रत्येक समाज अपनी परम्पराओं के अनुसार ही विवाह सम्पन्न करता है। इसके विपरीत जाने पर समाज व परिवार से संघर्ष करना पड़ता है। 'कस्बाई सिमोन' की नायिका विवाह न कर स्वतंत्र होकर 'लिव इन रिलेशन' में जीवन व्यतीत करती दृष्टिगत होती है, जिससे उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

डॉ.शरदसिंह का व्यक्तित्व - कृतित्व

मध्यप्रदेश के पन्ना में जन्मी डॉ.. शरदसिंह लेखिका हैं। इनका जन्म 29 नवम्बर 1963 को हुआ। इन्होंने खजुराहो की मूर्तिकला पर अपना पी.एचडी.कार्य पूर्ण किया है। वे किशोरावस्था से ही साहित्य सृजन करने लगीं। आपने कई कहानियाँ और उपन्यास लिखे। इनके तीन

उपन्यास हैं - 'पिछले पन्ने की औरतें', 'पचकौड़ी' और 'कस्बाई सिमोन'। डॉ.शरदसिंह ने प्रायः उन बिन्दुओं पर ही लिखा है जो अछूते रह गये हैं। इन्होंने आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं यू.जी.सी. के लिये पटकथा लेखन आदि का कार्य किया है। इन्हें कई सम्मान भी प्राप्त हो चुके हैं - राष्ट्रीय पण्डित गोविन्द वल्लभ पंत सम्मान, परिधि सम्मान, पण्डित रामानंद तिवारी स्मृति प्रतिष्ठा सम्मान, माँ प्रभोदवी सम्मान तथा लीडिंग लेडी आफ मध्यप्रदेश

के सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

नारी मुक्ति और कस्बाई सिमोन

आज की नारी स्वतंत्रता चाहती है। वह किसी प्रकार का बंधन नहीं चाहती। वह अपने अधिकार चाहती है। यदि एक पुरूष 'लिव इन रिलेशन' का जीवन व्यतीत करता है, तो उसे समाज कुछ नहीं कहता, लेकिन यही समाज नारी को ऐसा करते देखता है, तो अपशब्द के अतिरिक्त अभद्र व्यवहार क्यों करता है? जबकि पुरूष के द्वारा कितनी ही महिलाओं के साथ संबंध क्यों न बनाये जायें उस पर कोई बंधन नहीं होता। क्यों ये बंधन केवल महिलाओं पर ही लागू किये जाते हैं ? उपन्यास की नायिका सुगन्धा के विचार हैं - 'बंधन! बंधन के जो रूप मैंने अब तक देखे थे उनमें स्त्री को ही बंधे हुए पाया था पुरूष तो बंध कर भी उन्मुक्त था ..पूर्ण उन्मुक्त! वह पत्नी के होते हुए भी एक से अधिक प्रेमिकाएँ रख सकता था रखैलें रख सकता था। यहाँ वहाँ फ्लर्ट कर सकता था।''1

'कस्बाई सिमोन' की नायिका (सुगंधा) अपने पिता व माँ के साथ रहती है। उसकी माँ और पिता के बीच रोज झगड़ा होता है। कभी-कभी तो यह झगड़ा माँ की सहनशीलता के बाहर हो जाता है और सुगंधा को लेकर माँ, पिता का घर छोड़ देती है। इसका असर यह होता है कि वह सोचती है विवाह में ऐसा ही होता

है और विवाह नहीं करने का निर्णय लेती है। एक स्थान पर कहती है - ''उफ, यह विवाह की परिपाटी, गढ़ी तो गई थी स्त्री के अधिकारों के लिए, जिससे उसे और उसके बच्चों को सामाजिक मान्यता, आर्थिक संबल आदि मिल सके किन्तु समाज ने उसे तमाशा बनाकर रख दिया। मैं इस तमाशे को नहीं जीना चाहती थी, इसलिए मैनें सोच लिया कि मैं कभी विवाह नहीं करूंगी।''2 वह अनुभव करती है कि माँ ने भी विवाह किया था, किन्तु विवाह कर के क्या पाया ? समाज में अपने आस-पास के लोगों को भी वह देखती है। तभी शादी का नाम सुनते ही कहती हैं कि ''ये किसने कहा कि मैं तुमसे शादी करना चाहती हूँ, कि तुमसे बच्चे पैदा करना चाहती हूँ ? तुम्हें पसंद करती हूँ बस इसीलिए तुम्हारा साथ चाहती हूँ।'' सुंगधा विवाह में विश्वास नहीं करती इसी कारण वह विवाह नहीं करना चाहती। लोगों के कहने पर भी वह उनकी बात नहीं मानती और लोगों की बातों से तंग आकर कहती है कि ''वाह! यह भी खूब रही, लोग चाहते हैं तो आप शादी कर लीजिए लोग चाहते हैं तो आप तलाक ले लीजिए, लोग चाहते हैं तो जिंदा रहें,

लोग चाहते हैं तो आप मर जाइए, मेरी अपनी जिंदगी पर अधिकार है या नहीं ?4 उसे अपनी स्वतंत्रता के लिये समाज क्या अपने परिवार से भी संघर्ष करना पड़ता है। उनकी माँ को जब पता चलता है कि उसकी बेटी किसी पुरूष के साथ बिना विवाह किये जीवन व्यतीत कर रही है, जो कि सही नहीं है, और समाज में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही हैं तो उसे समझाने का

प्रयत्न करती है, तब सुगंधा कहती है ''प्लीज माँ! गॉड सेक, मैं अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीना चाहती हूँ, आपकी तरह नहीं।''5

सुगंधा अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है कि ''एक ओर तो हम राधा-कृष्ण की पूजा करते हैं और उन्हें आराध्य मानते हैं लेकिन कोई विवाहित स्त्री किसी अन्य पुरूष के साथ घूमे - फिरे तो बदचलन कहने लगते हैं।''6 सुगंधा एक को छोड़ दूसरे के साथ रिलेशन बनाती है और इसी तरह भटकती रहती

है। एक स्थाई जीवन व्यतीत नहीं कर पाती। समाज उसे मुक्त भी नहीं रहने देता। दूसरी और समाज की भी फिक्र उसे सताती है। वह अपनी कस्बाई मानसिकता को नहीं त्याग पाती है और न ही महानगर की जीवन-शैली का अनुसरण कर पाती है। जिसके साथ रहती है वही अंत में उसके विरूद्ध अपशब्दों का प्रयोग करने लगते हैं। वास्तव में 'लिव इन रिलेशन' में जीवन बिताना आधुनिक युग में फैशन बन गया है, लेकिन छोटे शहरों या कस्बों में इस तरह जीवन व्यतीत करना असंभव है। प्राचीन काल में भी तो गंधर्व विवाह होता था वो भी तो 'लिव इन रिलेशन' जैसा ही था। सुगन्धा स्वतंत्र जीवन जीना चाहती थी। बिना किसी बंधन, परम्परा के तो उसे इससे अच्छा कोई उपाय नहीं आता है उसे यह 'लिव इन

रिलेशन ' में जीने का तरीका अपने विचारों जैसा लगता था। इसी कारण वह इसी तरह जीवन व्यतीत करती है और अपने आस-पड़ोस, घर, परिवार, दफ्तर सभी जगह संघर्ष करती दिखाई देती है। नारी मुक्ति में षिक्षा सबसे अहम भूमिका अदा कर सकती है। यदि दहेज में दिये जाने वाले रूपयों का कुछ अंश भी नारी की शिक्षा पर खर्च कर दिया जाये तो उसकी स्थिति में काफी हद तक सुधार आ जायें, लेकिन होता इसके विपरीत ही है। नारी को समान अधिकार दिलाने में पुरूषों की भी अहम भूमिका हो सकती है, क्योंकि अधिकारों का हनन करने वाला ओर कोई नहीं, यही पुरूष प्रधान समाज ही रहा है। एक ओर तो वह नारी को लक्ष्मी, दुर्गा के रूप में पूजता है वहीं दूसरी ओर लातों-घूसों से पीटता व प्रताड़ना देता है और कभी तो दहेज के नाम पर जला भी दिया जाता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि लार्ड बायरन का यह कथन हैं कि ''पुरूष का प्रेम उसके जीवन का अलग हिस्सा है, जबकि एक स्त्री का वह सम्पूर्ण जीवन

है।''7

निष्कर्ष

डॉ.शरदसिंह ने अपने उपन्यास 'कस्बाई सिमोन' में एक स्त्री के अंतर्द्वन्द्व को चित्रित किया है। आधुनिकता की अंधी दौड़ महानगरों से लेकर कस्बे और गाँवों तक फैल गई है। उन्होंने उस विषय पर अपनी कलम चलाई है, जिसके बारे में भारतीय समाज अभी चिंतन के स्तर पर परिपक्व नहीं हुआ है। जब तक स्त्री-पुरूष को अलग-अलग समझा जाता रहेगा तब तक उनकी स्वतंत्रता को समान नहीं किया जा सकता। समाज को, दोनों को समान समझना होगा, तभी जाकर स्त्री को अपने अधिकार पूर्णतः मिल सकेंगे। नारी को अपनी स्थिति सुधारना है, तो उसे स्वयं प्रयासरत होना पड़ेगा, स्वयं आवाज उठानी होगी, अपने प्रति होने वाले अत्याचारों के खिलाफ लड़ना होगा तभी जाकर समाज में नारी मुक्ति की लहर दौड़ पाएगी ओर उसे अधिकार व सम्मान मिल सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कस्बाई सिमोन, डॉ. शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 31।

2..समीक्षा, सम्पादक-सत्यकाम, अप्रैल-जून 2013, पृष्ठ संख्या-19।

3. कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 31।

4. कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 67।

5..कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 107।

6. कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 205।

7 समीक्षा, सम्पादक, सत्यकाम, अप्रैल-जून 2013, पृष्ठ संख्या 20।